विज्ञान की पढ़ाई और अंग्रेजी

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

अंग्रेजी के कुछ अंधभक्त लोगों ने देश में यह विचार भी फैलाया कि अंग्रेजी के बिना विज्ञान की पढ़ाई नहीं हो सकती। विज्ञान की सब ऊँची पुस्तकें अंग्रेजी में हैं। अगर अंग्रेजी हट गई तो विज्ञान भी हट जाएगा।

सच पूछा जाए तो बात उल्टी ही है। अंग्रेजी शिक्षा और विज्ञान में तो छत्तीस (36) का आँकड़ा रहा है। एक का मुँह इधर तो दूसरे का मुँह उधर! ऑक्सफोर्ड और कैंब्रिज विश्वविद्यालय के पुराने बही-खाते निकालकर देखें तो मेरी बात समझ में आ जाएगी।

अंग्रेजी शिक्षा के इन गढ़ों में विज्ञान और गणित की पढ़ाई की बड़ी उपेक्षा होती थी, क्योंकि विज्ञान तर्क करना सिखाता है और तर्क मजहब का दुश्मन है और मजहबी लोग ही इन शिक्षा केंद्रों को अपने अनुदान से जीवित रखते थे। ऐसी स्थिति में विज्ञान और गणित की पढ़ाई घरों में ही चलती थी। जॉन स्टुअर्ट मिल जैसे प्रसिद्ध विचारक और गणितज्ञ ने विश्वविद्यालय जाने के बजाय घर में बैठकर पढना-लिखना ज्यादा अच्छा समझा। आपने माइकल फेराडे का नाम सुना होगा, जिसने बिजली का आविष्कार किया। इस आदमी ने कभी ऑक्सफोर्ड या कैंब्रिज का मुँह तक नहीं देखा।

आक्सफोर्ड और कैंब्रिज का, यह विज्ञान की उपेक्षावाला रुख भारत में भी आया क्योंकि बंबई, मद्रास और कलकत्ता में अंग्रेज ने जो विश्वविद्यालय कायम किए, वे उन्हीं की नकल पर थे। इन भारतीय शिक्षा केंद्रों में भी ज्यादा जोर 'अंग्रेजी भाषा, साहित्य और धर्म-विद्या' को पढ़ाने पर था। यहाँ भी विज्ञान, गणित आदि विषयों की उपेक्षा की गई। अंग्रेज को इससे कोई मतलब नहीं था, खासकर हुकूमत करनेवाले अंग्रेज को, कि भारतीय प्रतिभा का विकास हो। वह मनुष्य की अदम्य इच्छा को आखिर कहा तक दबाया जा सकता है?

अगर भारत की प्रयोगशीलता को दबाया नहीं गया होता, अंग्रेजों के द्वारा, मुगलों के द्वारा तथा अन्य विदेशी आगंतुकों के द्वारा, तो मेरा विश्वास है कि चाँद पर आदमी को भेजने का काम सबसे पहले भारत ही करता। भारत में तो आदिकाल से इस बात का ज्ञान और यह मान्यता रही है कि इस पृथ्वी के अलावा अन्य ग्रहों में भी जीवन है। 'विमानशास्त्र' नामक प्राचीन देखकर मैं दंग रह गया। उसमें ध्वनि की गति से उड़नेवाले विमानों का उनकी बनावट का, उनके सिद्धांतों का विशद् वर्णन किया गया है।

मैं कहानी-किस्सों की बात नहीं कर रहा हूँ। पोगापंथ और गप्पों में मेरा जरा भी विश्वास नहीं है। मैं आपसे आर्यभट्ट के गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत और लीलावती के गणित की बात कर रहा हूँ, जिन्हें सारी दुनिया ने मान्यता दी है। चरक और सुश्रुत की बात कर रहा हूँ, वागभट्ट की बात कर रहा हूँ। पिछले दिनों डॉ. रघुवीर के पुत्र डॉ. लोकेशचंद्र ने जावा, बाली, सुमात्रा, साइबेरिया आदि स्थानों से लाए हुए अनेक ग्रंथ, चित्र और पदार्थ दिखाए। मैं यह देखकर चकित रह गया कि भारतीय शल्य-चिकित्सा का प्रचार इन सारे इलाकों में था। आज से कई हजार वर्ष पूर्व भारतीय शल्य-चिकित्सा काफी विकसित थी। इसी तरह के रसायन शास्त्र और भौतिक विद्या में भी भारतीयों ने उल्लेखनीय प्रगति की थी। इसे उल्लेखनीय इसलिए कहता हूँ कि उसी काल में अन्य देशों की तुलना में, खासकर ब्रिटेन की तुलना में भारत हजारों मील आगे था। लेकिन मुख्य प्रश्न यह है कि इस प्रगति को लकवा क्यों मार गया? यह प्रगति अपने तर्कसंगत मार्ग पर क्यों नहीं चल सकी?

इसके कई कारण हो सकते हैं लेकिन .....पर अंग्रेजी लाद दी गई तो बच्चों ने विज्ञान कम पढ़ा और अंग्रेजी ज्यादा।

जब किसी विदेशी भाषा के जरिए बच्चों को विज्ञान पढ़ाया जाता है तो वह बोझिल, नीरस और अरुचिकर हो जाता है। विज्ञान क्या है? प्रयोग का दूसरा नाम ही विज्ञान है। जब बच्चा प्रयोग करता है तो उसके और उपकरणों बीच भाषा की कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। भाषा को दासी की तरह सेवा करनी चाहिए। भाषा को साधने की जरूरत नहीं होनी चाहिए। लेकिन जब अंग्रेजी में विज्ञान पढ़ाया जाता है तो एक विद्यार्थी प्रयोग प्रारंभ करे, उसके पहले उसे अंग्रेजी से कुश्ती लड़नी पड़ती है। पहले भाषा समझे, फिर प्रयोग करे!

एक पाँचवीं कक्षा के बच्चे को अगर अंग्रेजी में कहा जाए कि 'होल्ड द टेस्ट-ट्यूब अपराइट', तो इस आदेश का पालन करने के पहले उसे समझना पड़ेगा कि 'होल्ड' का मतलब क्या है, 'टेस्ट-ट्यूब' का मतलब क्या है और 'अपराइट' का मतलब क्या है तथा इन सब शब्दों को एक साथ रखने पर क्या मतलब निकलता है? यह सब ठीक-ठीक समझे बिना वह प्रयोग नहीं कर सकता, जबकि दूसरी कक्षा के बच्चे से आप उसकी मातृभाषा में कहें कि 'परख-नली को सीधा पकड़ो' तो वह तत्काल, बिना किसी कठिनाई के उस आदेश का पालन करेगा और प्रयोग कर लेगा। ऐसा क्यों होता है?

ऐसा इसलिए होता है कि जब वह एक-डेढ़ साल का था, तभी से उसने अपनी माँ के मुख से इसी भाषा में इसी तरह के कई वाक्यों को सुना है और उसका पालन किया है। उसे भाषा को साधने की जरूरत नहीं है। वह तो उसे जन्म-घुट्टी में पिलाई गई है। अब आप ही बताइए, प्रयोग या शोध किस भाषा में आसानी से हो सकता है? मातृभाषा में या विदेशी भाषा में?

विडंबना यह है कि विज्ञान के बगीचे तक पहुँचने के लिए एक छात्र को अंग्रेजी का जलता हुआ मरुस्थल पार करना पड़ता है। कुछ सी.वी. रमन और कुछ हरगोविंद खुराना और कुछ नार्लीकर जैसे अदम्य साहसी लोग तो उस मरुस्थल को भी हँसते-हँसते पार कर जाते हैं और अपना जौहर दुनिया को दिखा देते हैं, लेकिन एक औसत विद्यार्थी या तो फल पाने की इच्छा ही नहीं करता है या रास्ते में ही दम तोड़ देता है या अपनी पूरी जिंदगी मरुस्थल पार करने में ही लगा देता है। स्वयं रमन जैसे वैज्ञानिकों ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि यदि भारत में विज्ञान मातृभाषा के जरिए पढ़ाया गया होता तो आज भारत दुनिया के अग्रगण्य देशों में होता। यह कितनी शर्म की बात है कि आजादी के 66 साल बाद भी भारत में आज तक एक भी विश्वविद्यालय ऐसा नहीं है जो छात्र-छात्राओं को भौतिकी, रसायन-शास्त्र, मेडिकल, इंजीनियरी और कानून आदि विषयों की शिक्षा उनकी अपनी भाषाओं में दे। यदि भारत में शिक्षा का माध्यम स्वभाषाएँ होती तो हमारे करोड़ों बच्चों की ऐसी फौज अब तक तैयार हो जाती, जो उपयोगी काम-धंधे सीखते, विज्ञान के नए-नए प्रयोग करते और इतने रोजगार पैदा कर देते कि देश में से बेरोजगारी ही खत्म हो जाती।

जो दुनिया के देश आज विज्ञान में आगे बढ़े हुए हैं, क्या वहाँ विदेशी भाषाओं के जरिए विज्ञान की पढ़ाई होती है? कतई नहीं। इंग्लैंड और अमेरिका में अंग्रेजी में, जर्मनी में जर्मन में, फ्रांस में फ्रांसीसी में, रूस में रूसी में और जापान में जापानी भाषा में विज्ञान पढ़ाया जाता है। रूस के बड़े-बड़े वैज्ञानिक अंग्रेजी का एक काला अक्षर भी नहीं जानते। फिर दूसरे देशों में होनेवाली वैज्ञानिक प्रगति के बारे में उन्हें जानकारी कैसे मिलती होगी? उस जानकारी को प्राप्त करने के लिए ये वैज्ञानिक अंग्रेजी या अन्य दर्जनों विदेशी भाषाएँ सीखने में अपना समय बरबाद नहीं करते।

हर देश में अनुवादकों का एक समूह होता है जो न केवल एक भाषा से बल्कि अनेक भाषाओं से विज्ञान की सामग्री देशी भाषाओं में ले आता है। यदि वैज्ञानिक स्वयं विदेशी भाषाएँ सीखना भी चाहें तो वे कितनी विदेशी भाषाएँ सीख सकते हैं, जबकि अनुवादक तो कई भाषाओं के हो सकते हैं। इसलिए यह तर्क तो बिलकुल थोथा है कि अंग्रेजी के बिना विज्ञान की पढ़ाई को धक्का लगेगा। बल्कि मैं तो उल्टी बात कहता हूँ। वह यह है कि अंग्रेजी के कारण विज्ञान की पढ़ाई को धक्का लग रहा है।

राजनैतिज्ञ, लेखक, संपादक